पंचम् अध्याय

" विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ "

-: पंचम् अध्याय :-

" विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ "

प्रस्तावना :-

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक प्रशासनिक व्यवस्थाओं से उत्पन्न जनसाधारण के मानसिक अंतर्द्वंद्व का जिक्र बड़ी खूबसूरती के साथ चित्रित किया है | विवेच्य कहानियों में कथ्यगत विविधता नज़र आती हैं | विवेच्य कहानियों में मनोविज्ञान, आतंकवाद, गरीबों का शोषण, उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर अत्याचार, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी इन मद्दों को केंद्रीभूत किया है | जीवन की विडम्बना, खोखलापन, अनैतिकता, टूटते मानवीय संबंध, आडंबर, अनाचार आदि समस्याओं का ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में चित्रित किया हैं |

मानव जीवन में जब किसी चीज का अभाव निर्माण होता है, तब वह अभाव की पूर्ति के लिए संघर्ष करता है, सफल कोशिशें करता हैं | इसके पीछे तीव्र इच्छा शक्ति,ज्ञान लालसा होती है | अगर सफल कोशिशों के उपरांत भी कामयाबी न मिले तो मानव पर मानसिक दबाव छाने लगता है, तब ' समस्या ' निर्माण होती है | आज भी समाज में चारों ओर समस्याएँ दिखाई देती हैं | इस सन्दर्भ में ' डॉ.विमल भास्कर ' लिखते हैं, " मनुष्य इच्छाओं का दास है और इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती हैं यही अतृप्ति कालांतर में जीवन में समस्याओं का जाल - सा फैला देती है | आज के युग में तो समस्याएँ जीवन के लिए इतनी बढ़ गई हैं कि उनके कारण जीवन स्वयं एक समस्या हो गया |"[1] इस प्रकार जीवन में निरंतर समस्याएँ बढ़ रही हैं |

5.1 **समस्या : व्युत्पत्ति अर्थ एवं परिभाषा** :-

' समस्या ' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है - संस्कृत भाषा के ' सम् ' उपसर्ग तथा ' अस् ' धातु के संयोग से ' समस्या ' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है | ' सम् ' का अर्थ है - ' एकत्र ' तथा ' अस् ' का अर्थ है ' फेंकना ' या ' रखना ' अर्थात् ' एक रखना ' या ' करना ' |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

हिंदी के विभिन्न कोशकारों ने जिस रुप में ' समस्या ' शब्द को परिभाषित किया है और इस शब्द के अनेक अर्थ प्रस्तुत किये हैं, वे निम्नलिखित प्रकार से दिये हैं |

5.1.1 " **हिंदी शब्दसागर** " **के अनुसार** :-

" किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है | और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है |

1. क्रि. प्र. :- देना - पूर्ति करना |
2. संघटन |
3. मिश्रण, मिलाने की क्रिया |
4. कठिन अवसर या प्रसंग | " [2]

तात्पर्य साहित्य के ज्ञान की जाँच करने के लिए श्लोक या छंद का अंतिम पद सामने रखकर संबंधित उस परीक्षार्थी को उसके आधार पर दिये गए अंतिम पद को पूर्ण करना पड़ता है | अर्थात् एक कठिन सवाल, समस्या ही परीक्षार्थी के सामने रखी जाती है |

5.1.2 " **भाषा शब्द कोश** " :-

" समस्या - संज्ञा , स्त्री , सं.

कठिन या जटिल प्रसंग, प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, किसी पद का अंतिमांश जिसके आधार पर पूर्व पद्‌य रचा जाता है | संघटन, मिश्रण, मिलने का भाव या क्रिया | किसी समस्या के सहारे किसी पद्‌य को पूर्ण करना |"[3]

प्रस्तुत परिभाषा में एक ऐसे उलझनवाले विचार का जिक्र आया है, जो सहज नहीं हो सकता, वह कठिन बात है |

5.1.3 " **प्रामाणिक हिंदी कोश** " :-

1." वह उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज न हो सके | कठिन या बिकट प्रसंग |

2. छंद का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सामने रखा जाता है |"[4]

उपर्युक्त परिभाषा से अभिप्रेत अर्थ ही प्रस्तुत परिभाषा से उद्धृत होता है |

5.1.4 ' **नालंदा विशाल शब्दसागर** ' :-

1. " वही उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके | कठिन या बिकट प्रसंग | प्रॉब्लेम |

2. संघटन

3. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सम्मुख रखा जाता है | "[5]

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह बात स्पष्टता से पता चलती है कि, ' समस्या ' किसी काव्य का वह अंश है, जिसके आधार पर पूर्ण पद की रचना की जाती है | जिसे कठिन, बिकट या उलझनवाली स्थिति के नाम से जाना जाता है | अतः कहा जा सकता है, मनुष्य जीवन जीते समय जिन कठिन परिस्थितियों का सामना करता है उन परिस्थितियों से निर्माण हुए सवालों को ' समस्या ' कहा जा सकता है |

मनुष्य जीवन का हमेशा ' समस्या ' से संबंध आता रहता है | जीवन में आई समस्याओं का निराकरण सहज नहीं हो सकता | ये समस्याएँ मनुष्य के लिए कोशिश कर, उन्हें सुलझाने का उपाय ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं | जिससे मानव को अनुभूति एवं अनुभव उपलब्ध होते हैं |

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में विविध समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं | उनको निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया हैं | ये वर्ग विषय की दृष्टि से दिए गए हैं |जिस पर निम्नलिखित रुप में प्रकाश ड़ाला जा रहा है |

1. राजनीतिक समस्या |
2. सामाजिक समस्या |
3. धार्मिक समस्या |
4. आर्थिक समस्या |
5. मनोवैज्ञानिक समस्या |
6. प्रशासनिक समस्या |

5.2 **राजनीतिक समस्या** :-

राजकाज की नीति राजनीति कहलाती है | इसमें प्रजा के हित के लिए शासन की निर्मिति की जाती है | आम जनता चुनाव द्वारा अपना नेता चुनती है | स्वतंत्रता के दौर में राजनेता जनहित के लिए ही अपना जीवन जीते थे | उस समय राजनीति का लोगों के मन पर अच्छा प्रभाव छाया हुआ था | लेकिन वर्तमान युग में कई स्वार्थी राजनेताओं के कारण राजनीति व्यवसाय और व्यापार बन गई हैं | आज के राजनेताओं में कूटनीति, बेईमानी, सत्तालोलुपता, दोगलेबाजी वृत्ति, व्यक्तिगत स्वार्थ - सिद्धि दिखाई देती हैं | चारों ओर खोखली नारेबाजी, अव्यवस्था दिखाई देती है | कई राजनेता स्वयं को मुनाफा प्राप्त हो इसलिए कोशिशें करते हैं | मीडिया का सहारा लेकर प्रसिद्धि पाने की कोशिश करते हैं | अपने - अपने राज्य के हित की बात सोचने से भाषावाद, प्रांतवाद भी निर्माण होते हैं | इस प्रकार राजनीति के क्षेत्र में संकुचित वृत्ति बढ़ गई हैं | जिससे राजनीतिक समस्याएँ निर्माण होती हैं |

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में राजनीति पर आधारित ' मुखौटेबाज राजनेता ' की समस्या चित्रित है | इसका विवरण निम्नलिखित है |

5.2.1 **मुखौटेबाज राजनेता की समस्या** :-

आज के राजनेताओं की ' कथनी और करनी ' में अंतर दिखाई देता है | इनमें स्वार्थांधता, अवसरवादिता, भ्रष्टाचार, दलबदलू वृत्ति ये दुर्गुण कूट -कूटकर भरे हुए दिखाई देते हैं | ये जनता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए स्वयं ही कोई हंगामा खड़ा करते हैं | इनका जनता के हित

की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं होता | ये सत्ता के लिए जनता का उपयोग करते हैं | ये राजनेता सच्चरित्र का मुखौटा अपने चेहरे पर धारण किये हुए नज़र आते हैं |

फरवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' रामधारी सिंह दिवाकर ' द्‌वारा लिखित ' पब्लिक ' कहानी में ' मुखौटेबाज राजनेता ' की समस्या को चित्रित किया है | प्रस्तुत कहानी के पात्र 'बैताल सिंह ' और ' डायंमड ' राजनेता बनने से पहले प्रसिद्ध गुंडे थे | लोग इनसे ड़रते हैं | ये दोनों आपस में रेल के ठेके लेने के लिए झगड़ते हैं | इसके लिए इन्होंने गोला - बारुद फेंके, गोलियाँ चलाई | प्रस्तुत कहानी में स्वार्थी, ढ़ोंगी राजनेताओं का यथार्थ चित्रण आया है | 'बैताल ' और ' डायमंड ' के लिए ' राजो सिंह ' नामक गुंड़ा गोली चलाने का काम करता है | ये दोनों राजनेता एक ही गाँव के हैं | ' बैताल ' चाहता है, उसके दादा ' घूरनसिंह ' की जमीन पर जो जोतदार काम करते हैं, वे उस जमीन को छोड़ने के लिए तैय्यार नहीं हैं | तो उन्हें ' राजो सिंह 'और उसके साथी वहाँ से हटा दे | 'डायमंड' उन जोतदारों का नेता है | अत: वह चाहता है, उन जोतदार किसानों पर अत्याचार न हो | इसलिए वह भी ' राजो सिंह ' से काम कराता है | वास्तव में दोनों राजनेताओं का उपर विवेचित विवाद को लेकर आपस में झगड़ना एक दिखावा है | ये दोनों अच्छे दोस्त हैं, वे मुनाफा भी आपस में, साझेदारी में बांटते हैं | यह बात आम जनता को पता है ; यह बौधू, बनारसी, टेकन गुरुजी इन पात्रों द्‌वारा प्रस्तुत कहानी में दर्शाया है | डायमंड और बैताल सिंह विपक्ष में रहकर लड़ते हैं पर रात के अंधेरे में ' राजो सिंह ' के साथ एक -दूसरे से हाथ भी मिलाते हैं | ये सिर्फ सत्ता के प्रति लोलुपी है और लोगों के मन में अपना अच्छा स्थान बनाकर वोट पाने की होड़ है |

इस तरह प्रस्तुत कहानी में सत्तालोलुपता, स्वार्थांधता के कारण राजनेता लोगों का शोषण करते हैं | उनमें दंगे छेड़ने का कारण सामने लाते हैं और बातों का मीड़िया के सामने तमाशा बनाते हैं पर स्वयं वे सब नेता गुंड़ों के साथ मिले हुए होते हैं | जनता के सामने रक्षक की भूमिका निभानेवाले ये राजनेता वास्तव जीवन में गुंड़े ही है, गुंड़ों के साथ मिलकर साजिश रचते हैं, इस पक्ष का सुंदर चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है | राजनेता रक्षक के रुप में भक्षक ही हैं | इसीलिए इनका व्यवहार और बातें एक - सी दिखाई नहीं देती | ये अपने चेहरे पर शराफत का मुखौटा धारण किये हुए नज़र आते हैं | प्रस्तुत कहानी में ' मुखौटेबाज 'राजनेता की समस्या को हु - ब - हू दर्शाया है |

5.3 **सामाजिक समस्या** :-

एक जगह रहनेवाले या एक ही प्रकार का काम करनेवाले लोगों के दल या समुदाय को ' समाज ' कहते हैं | इन दलों का निर्माण किसी विशिष्ट उद्‌देश्य से किया जाता हैं |समाज में पारिवारिक व्यवस्था, छोटे या बड़े परिवार, गाँव, शहर , महानगर , कस्बा, नारी की स्थिति , विवाह, स्त्री - पुरुष संबंध, जीवन -मूल्य आदि का अंतर्भाव होता हैं | समाज मान्य आचरण के खिलाफ व्यवहार करने पर मानव के जीवन में ' समस्या ' निर्मित होती है | ये समस्त्राएँ स्वार्थ, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि विविध कारणों से निर्माण होती हैं |

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों में प्रमुख रुप से ' सामाजिक समस्याओं ' को चित्रित किया हैं | ' सामाजिक समस्या ' के संदर्भ में ' राम आहुजा ' लिखते हैं ," सामाजिक समस्या शब्द उसी विषय के लिए उपयोग किया जाता है जिसे सामाजिक आचारशास्त्र और समाज प्रतिकूल समझता है |"[6] अर्थात् समाज की दृष्टि से प्रतिकूल समझे गए विषयों को लेकर निर्माण हुए सवालों को ' सामाजिक समस्या ' कहा जा सकता है | विवेच्य कहानियों में शोषण, लिंगभेद, परित्यक्ता नारी की, नक्सलवादियों की आदि समस्याओं को उजागर किया हैं |

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित सामाजिक समस्याएँ निम्नलिखित हैं |

5.3.1 **अवैध यौन समस्या** :-

मनुष्य की रोटी, कपड़ा, मकान इन तीन आवश्यक जरुरतों के सिवा ' यौन तृप्ति ' ये भी एक आवश्यक जरुरत है | अगर किसी व्यक्ति की यौन तृप्ति नहीं होती तो वह अनैतिक मार्ग से भी अपनी जरुरत पूर्ण करने के लिए अवैध यौन संबंध को अपनाता है | प्रस्तुत संदर्भ में ' डॉ. वाय.बी.धुमाळ ' लिखते हैं, " युवक और युवतियों में प्रौढ़ और प्रौढ़ाओं में यौन सुख के प्रति अतृप्ति, तीव्रता और मुक्तता के कारण विकृत यौन चेतना की निर्मिति होती है |" [7] अवैध यौन समस्या अनमेल विवाह, जीवनसाथी का रुखापन या व्यंग्य, यौन सुख की अतृप्ति आदि कारणों से निर्माण होती हैं |

प्रस्तुत समस्या का चित्रण नवंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' अजय नावरिया ' द्‌वारा लिखित ' चीख ' कहानी में किया है | प्रस्तुत कहानी का नायक ' मैं ' मुंबई शहर में पार्लर में

मसाज करने का काम करता है | उसका उचित काम देखकर पार्लर के मालिक ' सुनेजा ' उसे ग्राहकों के घर मसाज कराने हेतु भेजते है | एक ग्राहक द्वारा उसे अवैध यौन संबंध रखने के लिए अधिक पैसे दिए जाते हैं | वह राजी होता है | नायक को पैसा कमाने का सबसे आसान तरीका यही है, यह एहसास होता है | वह ' अवैध यौन संबंध ' रखता है | उसके जीवन में ग्राहक बनकर एक समय डी.सी.पी. वरुण की पत्नी ' शुचिता ' आती है | शुचिता का वरुण से जबरदस्ती से विवाह कराया गया है | वरुण उसे पत्नी का हक़ नहीं दे पाता, इसलिए वह अवैध यौन संबंध रखती है | प्रस्तुत प्रसंग से नाराज एवं क्रोधित होकर वरुण नायक को जान से मार ड़ालता है |

नवंबर 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' शैलेन्द्र सागर ' द्वारा लिखित ' प्रतिरोध ' कहानी है | प्रस्तुत कहानी की नायिका ' नंदिता ' परित्यक्ता नारी है | वह अपने बेटे के साथ रहती है | उसका बेटा पढ़ाई के लिए होस्टेल में रहने लगता है तो नंदिता को अकेलापन जहर की तरह महसूस होने लगता है | कुछ दिनों बाद उसकी मुलाकात अधिव्याख्याता ' दीपंकर ' के साथ होती है | दीपंकर विवाहित है , पर उसकी अपनी पत्नी के साथ ठीक से बनती नहीं | उसे अपनी पत्नी से लगाव भी नहीं अतः परिवार के होते हुए भी वह अकेला है | नंदिता और दीपंकर के विचार एक -दूसरे से मेल खाते हैं अतः अकेलेपन की वजह से भी उनमें दोस्ती होती हैं | दीपंकर नंदिता से यौन संबंध रखता हैं, पर उसे समाज के सामने अपना नहीं सकता | नंदिता यह बात समझती है, फिर भी अवैध यौन संबंध दीपंकर से साथ रखती है | .

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में पति द्वारा यौन संबंध की तृप्ति न होना, परित्यक्ता तथा अकेलेपन के कारण यौन संबंध रखे गए हैं |

5.3.2 **<u>मानवता को तिलांजलि देनेवाली समस्या</u>** :-

समाज का व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में अनन्य साधारण महत्त्व है ; अतः हमेशा समाज के प्रति हर व्यक्ति को ऋणी रहना चाहिए | हर व्यक्ति को समाज के लिए कुछ न कुछ करना चाहिए | वर्तमान काल में अधिक मात्रा में सिर्फ अपने तक सोचने की स्वार्थी वृत्ति बढ़ रही है | वर्तमान युग में

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

इसी स्वार्थांधता के कारण मानवता को तिलांजलि देनेवाली घटनाएँ समाज में घटित होती दिखाई देती हैं | जो गंभीर समस्या के रुप में उभर रही है |

जून, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' मुकेश कौशिक ' द्वारा लिखित ' बलात्कार ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी के मुसाफिर रात के समय रेल से सफर कर रहे हैं | वर्ष के अंतिम दिन होने से सर्दियों का मौसम है | रेल की बोगी में भीड़ अधिक होने के कारण लोग जहाँ जगह मिली है, वहाँ अपने सामान के साथ बैठे हुए हैं | यहाँ तक कि लोग दरवाजे के पास भी बैठे हुए हैं | रेल आधी रात को ' झांसी स्टेशन ' पर रुकती है | एक महिला बाहर से दरवाजा खोलने के लिए यात्रियों से बार-बार निवेदन करती है | पर भीड़ होने से एवं स्वार्थांधता के कारण कोई भी दरवाजा नहीं खोलता | उसकी बिनती का यात्री मजाक उड़ाते हैं | गाड़ी जब छूटती है, तब महिला असहाय होकर गाड़ी की सीढ़ियों पर चढ़ती है, पर थोड़ी देर बाद गाड़ी से गिर कर उसकी मृत्यु हो जाती है |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में ' मानवता को तिलांजलि देनेवाली समस्या ' का चित्रण किया गया है |

5.3.3 **<u>परित्यक्ता नारी की समस्या</u>** :-

नारी पर हमेशा पुरुष ने वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश की है | अगर वह इस अन्याय का विरोध करती है, तो पुरुष उसका परित्याग करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं | इसी कारण ' परित्यक्ता नारी ' की समस्या निर्माण हो जाती हैं | ' परित्यक्ता नारी ' के संदर्भ में ' डॉ.योगेश सूरी ' लिखते हैं कि, " परित्यक्ता नारी वह नारी कहलाती है, जो पति द्वारा किन्ही कारणों के होकर परित्याग कर दी जाती है |" [8] अर्थात् पति के अहं के कारण पत्नी को त्याग दिया जाता है | पत्नी का परित्याग करने के विविध कारण होते हैं |

प्रस्तुत समस्या नवंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' शैलेन्द्र सागर ' द्वारा लिखित ' प्रतिरोध ' कहानी में चित्रित है | प्रस्तुत कहानी की नंदिता अमीर,सुसंस्कृत, घर की बेटी है | उसकी विवाह योग्य उम्र होने के उपरांत बैंक अफसर ' सुबोध ' के साथ उसका विवाह बड़ी धूमधाम से होता है | नंदिता के सास - ससुर पहले से अलग रहने के कारण वह पति के साथ अपनी गृहस्थी बसाती हैं |

सुबोध स्वभाव से शक करनेवाला व्यक्ति है | उसे पत्नी का पार्टियों में सज - धज के जाना, अन्य पुरुषों के साथ हँस कर बातें करना बिल्कुल पसंद नहीं | वह चाय में पत्ती कम होने, रुमाल को इस्त्री ठीक से न करना आदि छोटी - छोटी बातों को लेकर अपनी पत्नी के साथ विवाद छेड़ता है | नंदिता गर्भवती रहती है, तब वह उसे एक दिन मारने के लिए हाथ उठाता है, इस बात से ड़र कर नंदिता मायके चली जाती है | प्रस्तुत बात से नाराज होकर सुबोध नंदिता का त्याग कर देता है | फिर कभी वह उसकी और बेटे की खबर तक नहीं पूछता | इस प्रकार , विवेच्य कहानी में ' परित्यक्ता नारी ' की समस्या चित्रित की है |

5.3.4 **लिंगभेद की समस्या** :-

भारतीय समाज में विवाह पश्चात् संतान प्राप्ति को महत्त्व दिया गया है | इसमें भी बेटी की तुलना में बेटे के जन्म को लेकर अधिक खुशी होती दिखाई देती है | घर में बेटों को बेटियों की तुलना में अधिक महत्त्व दिया जाता है | पहले बेटो की फरमाईश पूरी की जाती है क्योंकि बेटे बुढ़ापे के सहारा होते हैं, यह समाज मन की धारणा है |अतः बेटों को ही जन्म देने के विचार से नारियाँ गर्भपात करने को भी तैयार होती हैं | इस प्रवृत्ति से समाज में बेटियों के जन्म का अनुपात कम होगा | भविष्य में लड़कों के विवाह के समय लड़कियाँ न मिलने से समस्या निर्माण होगी | समाज नारी विहीन होगा, इसकी कल्पना भी असंभव है |अतः लिंगभेद न करते हुए बेटियों से भी अच्छा व्यवहार करना आवश्यक है | बेटा या बेटी दोनों को समान हक़ देना चाहिए |

अक्तूबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' अल्पना मिश्र ' द्वारा लिखित ' बेतरतीब ' कहानी है | प्रस्तुत कहानी में बेटियों के प्रति किए जानेवाले उपेक्षित व्यवहार का भंड़ाफोड़ किया है | प्रस्तुत कहानी के पिता भगवतशरण अपनी बेटियों के प्रति पक्षपात का व्यवहार करते हैं | इनकी बड़ी बेटी का दाखिला पहली बार जब विश्वविद्यालय में करना था तो अकेली लड़की को दूर शहर में पढ़ने के लिए भेजना इन्हें नागवार गुजरा था | इन्होंने अपनी बेटी का दाखिला नजदीकी विश्वविद्यालय में किया | लेकिन जब उनका बेटा दसवी कक्षा के उपरांत प्रोफेशनल कोर्स करने के लिए ' मुंबई ' जाना चाहता है, तो बेहिचक दूरी का खयाल किए बिना कि, ' मुंबई ' दूर है उन्होंने बेटे

का दाखिला किया | यह पक्षपात बच्चों तक ही सीमित न था तो भगवतशरण बेटियों के निर्णयों में पत्नी की सलाह लेना उचित नहीं समझते थे |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में ' लिंगभेद की समस्या ' बेटियों को बेटों से दोयम दर्जे का मानने के कारण निर्माण हुई है |

5.3.5 **अनमेल विवाह की समस्या** :-

अनमेल विवाह में पति -पत्नी की सोच - विचार में अधिक अंतर होता है | ऐसे विवाहों में अधिकतर पति की उम्र पत्नी की उम्र से बड़ी होती है और पति विधुर होता है | तब ' अनमेल विवाह ' की समस्या निर्माण होती है | अनमेल विवाह में आयु, विचार, संस्कारों में भी अंतर दृष्टव्य हैं | इस संदर्भ में ' डॉ. रामेश्वर नारायण ' लिखते हैं," अनमेल का तात्पर्य पति -पत्नी के बीच वैवाहिक उम्र, अर्थ-व्यवस्था और वैचारिक विसंगतियाँ ही हैं |"[9] अर्थात् पत्नी से पति की उम्र अधिक होने के कारण उनके विचारों में अंतर दिखाई देता है साथ ही पति - पत्नी के घर की आर्थिक परिस्थिति भी भिन्न हो सकती है | अनमेल विवाह के सौंदर्य, बेटी के घरवालों का बेटी को बोझ मानना, बेटी के घरवालों की गरीब परिस्थिति, पति के पहली पत्नी की मृत्यु होना आदि विविध कारण हो सकते हैं |

अप्रैल, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' नीलिमा सिन्हा' द्वारा लिखित ' तैंतीस परसेंट ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी की पात्र ' नीरा चौधरी ' गरीब घर की बेटी है | अमीर व्यक्ति ' रामसिंहासन ' द्वारा नीरा के लिए रिश्ता आने पर उसके मॉ -बाप पति अमीर है, बेटी खुश रहेगी इस सोच के आगे विवश होते हैं | अपनी बेटी नीरा का विवाह वे विधुर, छः संतानों के पिता 'रामसिंहासन ' से कराते हैं | रामसिंहासन अधेड़ उम्र में अब संतान नहीं चाहते इसलिए नीरा की नसबंदी कराते हैं जिसके लिए नीरा तैय्यार न थीं | पहले ही नीरा पिता की उम्र के व्यक्ति के साथ विवाह कर खुश नहीं थी, मातृत्व छीन जाने पर वह सूखे काठ - सी हो गई | अपना दु:ख वह अपने माता - पिता को भी बता नहीं सकती थी क्योंकि, वे उसे बोझ समझते थे | इस संदर्भ में कहानीकार ' नीलिमा सिन्हा ' ने लिखा है, " नीरा के माँ- बाप की हैसियत -औकात कुछ इतनी बुरी तो न थी कि पैसे की गरज में अपनी कमसिन बेटी इस अधेड़, दूहाजू, छः बचो के बाप के साथ ब्याह आते ... किंतु पैसा बड़ी चीज

होती है, बेटी का क्या है? वह तो किस्मत का कर्ज है, जो जैसे भी उतरे, उतार फेंकना है |" [10] इस तरह माँ -बाप का व्यवहार, अनमेल विवाह इन कारणों से नीरा निराश होती है |

विवेच्य कहानी में ' अनमेल विवाह ' के कारण नीरा की दुर्दशा का चित्रण किया गया है |

5.3.6 **नक्सलवादियों की समस्या** :-

' नक्सलवाद ' का सामान्य अर्थ है, " सत्ता को हथियाने के लिए हथियारों से काम लेने की विचारधारा " [11] पश्चिम बंगाल में सबसे पहले नक्सलवाद की शुरुआत हुई थी | यहाँ खेती करने के लिए जमीन जोतदारों को दी गई थी | लेकिन कुछ समय बाद उन जमीनों पर जमींदारों ने अपना हक़ दिखाने की कोशिश की | अत: इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने एवं न्याय मिलने के लिए किसानों ने हाथ में शस्त्र लिये | ऐसे शस्त्रधारी लोगों को ' नक्सलवादी ' नाम से संबोधित किया जाता है |

जून, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' सोहन शर्मा ' द्वारा लिखित ' समरवंशी ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में नक्सलवादियों की समस्या को दर्शाया है | प्रस्तुत कहानी के नक्सलवादी जोर-जुल्म, शोषण के खिलाफ आवाज उठाते समय हाथ में बंदूक लेते हैं | यह बात इन्हें गलत नहीं लगती | इनकी सोच है, लोहे को लोहे से ही काटा जा सकता है | इस संदर्भ में प्रस्तुत कहानी का पात्र ' जगदीश ' नक्सलवादी है वह कहता है, " मालिक जमींदार और पुलिसवाले लात -जूते और गोलियाँ चलाते हैं, तो वह गलत नहीं है, मजदूर किसान अपना अधिकार पाने के लिए गोलियाँ चलाने पर उतर आते हैं तो वह गलत कैसे है? लड़ाई तो न्याय और अन्याय के बीच है ... नक्सली तो अन्याय के खिलाफ ही लड़ रहे हैं ... इसमें क्या गलत है ?" [12] शोषक पूँजीवादी व्यवस्था को लोहा मनवाने के लिए इन नक्सलवादियों को सशस्त्र क्रांति ही उचित लगती हैं | इनका एक दु:ख यह है कि आम जनता इनकी कड़ी आलोचना करती हैं ; साथ ही पुलिस के लिए खबरी भी बनती है | पुलिस इनके जीवन और इनके आधारक्षेत्रों को तहस - नहस कर देती हैं |इनके पास यातायात के साधन कम होने केकारण इन्हें छापामार युद्धनीति को अपनाना पड़ता है | ये नक्सलवादी पुलिस और आम जनता के कारण परेशान होते हैं |

5.3.7 **यात्रियों को होनेवाली असुविधा की समस्या** :-

लोग धर्मार्थ अथवा पर्यटनार्थ यात्रा करते हैं | आज-कल तो नई - नई यात्रा कंपनियाँ बाजार में लोगो के आकर्षण का केंद्र बन रही हैं | इससे देश - विदेश में यात्रा करने हेतु यात्रियों को सारी सुविधाएँ उपलब्ध की जाती हैं | फिर भी यात्रा करते समय कभी - कभी अनेक समस्याओं का सामना यात्रियों को करना पड़ता हैं |

फरवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' दूर्वा सहाय ' द्वारा लिखित ' अंधेरे में आकार लेता नाटक ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में यात्रा करते समय अचानक निर्माण हुई असुविधा की समस्या को उजागर किया है | प्रस्तुत कहानी की नायिका पंकज की पत्नी अपनी बेटी के साथ रेल से सफर कर रही है | वह अपनी बर्थ की सामने की बर्थ पर एक पुरूष और कम उम्र की लड़की को अश्लील हरकतें करते हुए देखती हैं | लड़की के व्यवहार से वह अंदाजा लगाती है, शायद वह घर से भाग आई है और वे दोनों पति - पत्नी नहीं हैं | कहानी की नायिका को उन पर क्रोध होता है | इस सन्दर्भ में ' दूर्वा सहाय ' ने लिखा है, " सार्वजनिक स्थान पर तमाकू सिगरेट का सेवन करना निषिद्ध हो गया, पर क्या ऐसी अश्लील हरकतों पर रोक लगाना जरूरी नहीं ?"[13] नायिका सिर्फ ये बातें सोचती है | बेटी का खयाल आने पर वह सो गई है, यह देख कर स्वयं भी पत्रिका पढ़ने की इच्छा होने पर भी जबरदस्ती सोती है |

मार्च, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' राजेन्द्र सिन्हा ' द्वारा लिखित ' भेड़ियाधसान ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में यात्री बैद्यनाथधाम की यात्रा कर रहे हैं | सभी यात्रियों को असुविधा का सामना करना पड़ता है | इसका प्रमुख कारण है - भीड़ | तीर्थस्थल पर इतनी भीड़ हैं कि, सड़क पर चलने के लिए जगह नहीं, घाट पर नहाने के लिए जगह नहीं, होटल में तो इतनी भीड़ हैं कि लोग मेज पर बैठे खाना खा रहे व्यक्तियों की कुर्सी के पीछे नंबर लगा कर खड़े हैं कि कब कुर्सी पर बैठे यात्रियों का खाना खत्म हो और वे बैठे | इसके लिए वे धक्का - मुक्की करते हैं | अधिक संख्या में लोगों ने गंगा - स्नान किया है, जिसके कारण गंगा नदी का पानी पीने योग्य नहीं रहा | वह दूषित हो चुका है |

अतः कहा जा सकता है विवेच्य कहानियों में लोगों के असहनीय व्यवहार, भीड़ इन कारणों से यात्रियों को असुविधा होती है |

5.3.8 **<u>प्रेम में असफल होनेवाले युवाओं की समस्या</u>** :-

मानव जीवन में प्रेम का महत्त्वपूर्ण स्थान है | मानव एक बार बिना खाना खाये या पानी पिये जीवित रह सकता है, लेकिन प्रेम बिना वह नहीं रह सकता | प्रेम जीवन को उल्हसित बनाता है | मनुष्य को बचपन में घरवालों से, बड़े होने पर समवयस्कों से, नौकरी या व्यवसाय करते समय साथी कर्मचारियों से, परिवार से प्रेम मिलता है |

आधुनिक युग में युवक - युवतियाँ शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि के कारण अधिक समय एक - दूसरे के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करते हैं | अन्य कारणों से कुछ युवक - युवतियो को प्रेम एक - दूसरे के आकर्षण में बांध लाता है | कभी - कभी यह प्रेम सफल होकर विवाह में परिवर्तित होता है, तो कभी - कभी असफल भी हो सकता है | इसके घरवालों से विरोध, प्रेमी ही के प्रति पूरा समर्पण नहीं आदि विविध कारण होते हैं |

मार्च,2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' राजीव सिंह ' द्वारा लिखित ' त्रिकोण ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी के ' मुकुल ' की प्रेमिका ' ऋचा ' है | कुछ दिन मुकुल से प्यार का नाटक करके वह उसका साथ छोड़कर उसके जीवन से दूर चली जाती है | प्रेम में असफल होने पर मुकुल यह समझ लेता है, सभी युवतियाँ झूठा प्यार करती हैं | आईंदा वह उसकी अपनी जिंदगी में आई अनेक लड़कियों के साथ प्रेम का नाटक करके उन्हें छोड़ देता है | इससे उसे ' ऋचा ' के प्रेम का बदला लेने का एहसास होता है पर इस चाह में वह अन्य लड़कियों के दिलों से खेलता है |

मई,2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' प्रियंवद ' द्वारा लिखित ' दावा ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी का नायक ' मैं ' एक लड़की के साथ कॉलेज जीवन से प्रेम करने लगता है |कॉलेज समाप्त होते ही लड़की के घरवाले उसका विवाह अपने पसंद के लड़के के साथ कर देते हैं |अत : प्रेमिका का विवाह होने के पश्चात् नायक शराब के व्यसन में डूब जाता है | उसका प्रेम सच्चा है अतः

वह जीवन में किसी अन्य लड़की से विवाह नहीं कर पाता | अपनी प्रेमिका की अतीत की प्यार भरी यादों के सहारे वह जीवन यापन करता रहता है | इस पर अड़िग भी रहता है |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में घरवालों से विरोध एवं युवती का युवक को प्रेम में फँसाना इन कारणों से युवकों के सामने असफल प्रेम की समस्या निर्माण हुई हैं |

5.3.9 **गुंड़ई प्रवृत्ति की समस्या** :-

गुंड़ई प्रवृत्ति के लोग हमेशा दूसरों पर अधिकार जताने की कोशिश करते हैं | आम जनता को ड़राना, धमकाना यह उनकी प्रवृत्ति होती हैं |इनके कारण आम जनता को अत्याचार सहना पडता है | आम जनता इनके द्‌वारा किये गए अन्याय का प्रतिरोध नहीं करती | गुंड़े लोगों की मानसिकता यही होती हैं कि, लोग उनसे डरें और उन्हें इज्जत दें |

जुलाई, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' रामेश्वर द्‌विवेदी ' द्‌वारा लिखित ' कंठ फटी बासुरी ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में जमींदार ' बिजली दुबे ' का गाँव पर एकाधिकार है | उसका बेटा ' सुल्तनवां ' गाँव की किसी भी स्त्री पर कु -दृष्टि रखता है | सुल्तनवां अगर किसी स्त्री को बेईज्जत करता है तो उसका बाप अपनी पहुँच के बल पर वह सारी बात रफा -दफा करता हैं | जिससे सुल्तनवां की गुंड़ई प्रवृत्ति दिन-ब -दिन बढ़ रही है |एक बार सुल्तनवां ने गाँव की अपाहिज ' सुरमी ' की आबरु लूटी | इस बात के प्रति न्याय मिलने के लिए उसके भाई ' कान्ह ' ने पंचायत बुलाई | इस समय ' बिजली दुबे ' को एहसास हुआ कि, अब वे अपने बेटे को बचाने में असमर्थ हो रहे हैं | तब इन्होंने इन्स्पेक्टर ' अजोधी पासवान ' को रिश्वत देकर कान्ह को उसकी ही बहन के जुर्म में फँसाया | इससे कान्ह घर छोड़ कर भाग गया | पुलिस के रुप में गुंड़ा बना ' अजोधी ' किसी भी समय कान्ह के घर की चीजों को तहस -नहस करके कान्ह के घरवालों को परेशान करता रहता | इस तरह गाँव के गुंड़े जो शरीफ दिखाई देते हैं वे आम जनता पर अत्याचार करते हैं, इस पक्ष का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है |

फरवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' रामधारी सिंह दिवाकर ' द्‌वारा लिखित ' पब्लिक ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में गुंड़ई प्रवृत्ति के लोग राजनीति में प्रवेश करते हैं | वे दुनिया के

सामने दुश्मनों की तरह व्यवहार करते हैं और जीवन में एक -दूसरे के साथ मिले हुए हैं, इस बात का विवेचन किया है | प्रस्तुत कहानी के गुंड़े ' बैताल ' और ' डायमंड ' अब विधायक बन गए हैं | दिन में तो ये विधानसभा में ' भुदनिया जमीन मामले ' को लेकर झगड़ते हैं, विवाद छेड़ते हैं और रात के समय जब जनता सो रही होती हैं तब जेल से फ़रार किये गए अपने साथी ' राजो सिंह ' के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करते हैं | आम जनता राजनेता रुपी गुंड़ों के शिकंजे में बुरी तरह फँस गई हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में ' गुंड़ई प्रवृत्ति ' की समस्या दृष्टव्य हैं |

5.3.10 **दृष्टिहीन लोगों की समस्या** :-

समाज में बहुत बड़ी आबादी दृष्टिहीन लोगों की है | उनमें से कुछ व्यक्ति अपनी कमजोरी के साथ समझौता कर पाते हैं, तो कोई नहीं कर पाते | इस सन्दर्भ में ' डॉ. सुजाता ' लिखती है, " अन्य शारीरिक दृष्टि से सामान्य और स्वस्थ व्यक्तियों से वह अपने को हीन समझने लगता है और उनके साथ सामान्य संतुलित व्यवहार नहीं कर पाता, उनसे अपने आपको कटा हुआ एकाकी अनुभव करता है |"[14] समाज के कुछ व्यक्तियों का व्यवहार विकलांगो के प्रति अच्छा तो कुछ व्यक्तियों का बुरा होता है | बुरे व्यवहार के कारण विकलांग व्यक्तियों की दिल को चोट पहुँचती है, अतः वे निराश हो सकते हैं |

मार्च, 2005 की ' हंस पत्रिका में ' जितेन्द्र भगत ' द्वारा लिखित ' दृष्टि ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी के दृष्टिहीन पात्रों में से अम्लान ' स्टिक ' का प्रयोग कोई उसे दृष्टिहीन कह कर चिढायेगा इसलिए नहीं करता | उसके घरवाले उसे ' स्टिक ' का प्रयोग करने की सलाह देते हैं, पर वह इन बातों को अनसुना करता है | स्टिक न लेने के कारण उसे पिता से मार भी मिली है, लेकिन इन बातों का उस पर कुछ भी असर नहीं होता | वह अपनी दीदी द्वारा दिए गए व्यंजन इसलिए नहीं खाता कि, कहीं वह बर्तन में सड़ी -गीली बासी चीजें न परोस दे | इस प्रकार अम्लान अपने लोगों पर विश्वास नहीं कर पाता | तो अम्लान का दृष्टिहीन मित्र अभय जीवन खुशी से जी रहा है | वह दूसरों की खुशियों में शामिल होता है, अभय को आत्मरक्षा के लिए स्टिक का प्रयोग करने की सलाह देता है | अम्लान को बी.एड. के पेपर की तैयारी करने के लिए रीड़र या राइटर ढूँढ़ने की आवश्यकता है

तो वह आश्वस्त करता है कि वह रीड़र या राइटर प्राप्ति की कोशिश करेगा | अभय को इतिहास और राजनीति की जानकारी है | वह दृष्टिहीन लोगों को सरकार द्वारा आरक्षण प्राप्त हो इसलिए अपने साथियों के साथ धरना देकर बैठता है |

' अभय ' और 'अम्लान ' वी.सी. ऑफिस की ओर जानेवाली बस में चढ़ते हैं | कंडक्टर से ' ब्लाईंड़ ' कह कर टिकट माँगने पर अम्लान के हाथ में स्टिक नहीं है, यह बात वह देखता है | कंडक्टर को लगता है यह नाटक कर रहा है अत: वह गालियाँ देने लगता है | बस के यात्री अभय की स्टिक दिखाकर उनके साथ सहृदयता का व्यवहार करने की सलाह कंडक्टर को देते हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में दृष्टिहीन लोगों के साथ सामान्य जनता द्वारा बुरा व्यवहार, दृष्टिहीन लोगों को जीवन यापन करते समय आनेवाली समस्याओं का चित्रण किया है |

5.3.11 **अंतर्जातीय विवाह की समस्या** :-

आधुनिक युग में अंतर्जातीय विवाहों का प्रचलन बढ़ चुका है | इसका प्रमुख कारण सह - शिक्षा यह है | इसके विविध कारणों को बताते हुए 'शीलप्रभा वर्मा ' लिखती है, " इसका कारण पाश्चात्य शिक्षा, सहशिक्षा, समानता की धारणा, राष्ट्रीय आंदोलन, वैज्ञानिक शिक्षा, औद्योगिकरण और नागर संस्कृति वर मूल्य प्रथा का कटु रुप आदि है |" [15] अर्थात् युवक - युवतियों पर पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव, उनकी सह शिक्षा , राष्ट्रीय आंदोलन द्वारा जातिभेद का उन्मूलन किया जाना, सह शिक्षा के कारण युवक - युवतियों के मन में समानता की धारणा अर्थात् नारी युवकों के समान लिख, पढ़ सकती है; यह बातें समझती हैं | अत: अंतर्जातीय विवाह करनेवालों की संख्या में बढ़त निर्माण हुई है | इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं | भारत में ये आज भी अस्वीकृत हैं |

अप्रैल, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' कांति देव ' द्वारा लिखित ' खजांची ' कहानी में ' अंतर्जातीय विवाह ' की समस्या चित्रित है | प्रस्तुत कहानी में हरिजन मनहर उच्च कुल की लड़की से प्रेम करता है |अत: वह अपनी प्रेमिका से विवाह करता है | ये बात लड़की के बिरादरी वालों को पसंद नहीं आती | इससे उन्हें धर्म क्षय होने का ड़र लगता है अत: वे गुंड़े भेजकर उनके द्वारा ' मनहर' की हत्या कराते हैं | इस बात से क्रोधित हरिजन उच्च कुल के लोगों को गालियाँ देते

हैं | इस तरह बात से बात बढ़कर शहर में अचानक हत्याओं का सिलसिला शुरु होता हैं | पुलिस के खबरियों की भी हत्या की जाती हैं | इस तरह ' अंतर्जातीय विवाह ' के कारण शहर में तनाव एवं संघर्ष का वातावरण निर्माण होता है |

दिसम्बर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' भालचन्द्र जोशी ' द्वारा लिखित ' लौटा तो भय ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में ब्राह्मणी ' तारा ' चमार ' जयंत मिश्रा' के साथ विवाह करती है | वे दोनों एक ही कॉलेज में पढ़ते थे | कॉलेज जीवन से ' तारा ' ' अंतर्जातीय विवाह ' के पक्ष में थी | ' अंतर्जातीय विवाह ' इस विषय पर ' तारा ' आकाशवाणी पर कार्यक्रम भी पेश कर चुकी हैं | ' तारा ' के प्रस्तुत फैसले को उसके पापा सह नहीं पाते और इसी गम में उनकी मृत्यु होती है |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में सह शिक्षा और समानता की धारण से अंतर्जातीय विवाह हुए हैं, यह दृष्टव्य हैं | लेकिन समाज इसको स्वीकृत नहीं कर पाता, इस पक्ष का मार्मिक चित्रण किया है |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में सामाजिक समस्याओं का उद्घाटन हुआ है |

5.4 **धार्मिक समस्या** :-

धर्म जीवन का मूल आधार है | किसी वस्तु या व्यक्ति में सदा रहनेवाला उसका मूल स्वभाव या गुण ' धर्म ' कहलाता है | किसी जाति या वर्ग के लिए निश्चित किये गए कर्तव्यो जैसे सदाचार, सत्कर्म को ' धर्म ' कहा जाता है | धर्म के ही आधार पर व्यक्ति नैतिक मूल्यों का पालन करता हैं | यह शक्ति का स्त्रोत है | धर्मग्रंथों के आधार पर नैतिक और उचित आचरण किया जाए यह बतानेवाले नियमों का पालन किया जाता है | अर्थात् धार्मिक आचारों - विचारों का पालन किया जाता है | किंतु वर्तमान काल में लोग भौतिकवादी बन गए हैं | उनके मन में दया, ममता, बंधुत्त्व, प्रेम आदि मानवीय गुणों का -हास होता जा रहा है | वह अंधविश्वास, पाखंड़ में फँसता जा रहा है | अतः इन्ही कारणों से भी धार्मिक समस्याएँ उपलब्ध होती है | ' वर्ष - 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में धार्मिक समस्याएँ चित्रित की हैं | वे निम्नलिखित प्रकार से हैं |

5.4.1 **अंधविश्वास की समस्या** :-

' अंधविश्वास ' का सामान्य ' अर्थ ' है, " बिना समझे बूझे या आँखें बंद करके किसी बात पर किया जानेवाला विश्वास, आँख मूँदकर यथार्थ मान लेना | "[16] वैज्ञानिक दृष्टि का अभाव अंधविश्वास को जन्म देता है | शिक्षित युवा पीढ़ी भी कभी - कभी अंधविश्वास का शिकार होती है | रूढ़ियों के नाम लेकर पशुहत्या जैसे कर्मकांड़ किए जाते हैं | कर्मकांड़ करने का यह मक्सद होता है कि, भगवान का आशीर्वाद मिले | लेकिन पशुहत्या से एक जीव की मृत्यु होती है और भगवान इससे खुश नहीं होंगे यह बात लोगों की समझ में जब आएगी तब समाज अंधविश्वास का पालन नहीं करेगा |

मार्च,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' राजेन्द्र सिन्हा ' द्‌वारा लिखित ' भेड़ियाधसान ' कहानी में अंधविश्वास की समस्या चित्रित है | प्रस्तुत कहानी के शिक्षित दांपत्य समीर और सुभद्रा को विवाह के कुछ सालों बाद भी संतान नहीं होती तो वे विज्ञान अर्थात् डॉक्टरी जाँच पर विश्वास करते हैं | डॉक्टरी जाँच से उन्हें पता चला समीर में दोष होने से उन्हें बच्चा नहीं होगा | समीर अपनी माँ की इच्छा की खातिर पत्नी के साथ बैद्‌यनाथधाम की यात्रा करने आता है | भीड़ के कारण वहाँ का वातावरण, गंगा का पानी दूषित बना हैं | उन्हें पता चलता है पुत्र कामना करनेवालों को प्रसाद रूप में भैंसों के बच्चों की बलि देकर उनका मांस खाने के लिए दिया जाता है | इस तरह पूजा, कर्मकांड़ के नाम पर लोग पशुहत्या करते हैं | यह अंधविश्वास ही है, यह रूढ़ियाँ नहीं हो सकती यह बात जानने पर समीर का ह्रदय परिवर्तन होता है | उसके ध्यान में यह बात आती है शिक्षित होकर भी अनजाने में वह आँखें मूँदकर रूढ़ियों का पालन कर रहा है, यह अंधविश्वास है | अब वह अपनी गलतो पर पछताता है और अंधविश्वास का शिकार होने से बचता है |

दिसंबर,2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' हर्षदेव ' द्‌वारा लिखित ' ओम नमो शिवायः ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में लोग सीधे, सरल स्वभाव के ' पुरचुरे ' जी को परेशान करते हैं | पुरचुरे जी ने अपने फ्लैट के एक कमरे में शिव की पिंड़ी की स्थापना करके छोटा पूजा - घर बनाया है | कॉलोनी के लोग स्वार्थवश उस पूजा - घर को सार्वजनिक मंदिर बनाते हैं | श्रद्‌धा के नाम पर ' पुरचुरे ' के परिवार का जीना बेहाल करते हैं | पुजारी के अनुरोध पर कॉलोनी के लोग सोमवार को

प्रसाद रूप में एक समय का भोजन देने की व्यवस्था करते हैं | लोग अंधविश्वास से चंदा देते हैं और स्वार्थी लोग मंदिर के नाम पर पैसा कमाने लगते हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में ' अंधविश्वास की समस्या ' का विवेचन किया है |

5.4.2 **मठों में फैलनेवाले अनाचार की समस्या** :-

भगवान की कृपा पाने के लिए साधक साधना करते हैं | इस साधना से योगाभ्यास, कुण्ड़लिनी जागृत करना, परमतत्व को प्राप्त करना आदि के लिए इन्हें मठों की आवश्यकता होती हैं | जहाँ मठाधिपति परमेश्वर को प्राप्त करने आये साधकों का मार्गदर्शन करते हैं | ये मठाधिपति सामान्य जनता को सांसारिक सुखों का उपभोग लेते हुए भजन, उत्सव आदि के द्वारा परमेश्वर की भक्ति करने के लिए प्रेरित करते हैं | मठों में केवल भगवान का पूजा - पाठ ही होने के कारण अन्य विषयों का ध्यान मानव मन को छू नहीं सकता |

धर्म शोषण का सबसे बड़ा हथियार है | आज भक्तिमार्ग नहीं बल्कि अंधविश्वास की वजह से धर्म के नाम पर होनेवाले शोषण की बात महत्त्वपूर्ण रही है | विषय, वासना, भोग आदि के द्वारा मठों में अनाचार भी फैल रहा है | अतः धार्मिक क्षेत्र भ्रष्ट हो गया है, यह हितकारी नहीं है |

अक्तूबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' मनोज कौशिक ' द्वारा लिखित ' कुण्ड़लिनी ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में ' सदानंद ' कुण्ड़लिनी जागृत करने के लिए महंथ ' नित्यानंद ' जी के मठ में साधना करता है | उसी मठ में रहनेवाला ' चेलाराम ' भगत वरिष्ठ होने से सबको अपमानित करता रहता है | इससे सभी भगत उससे नाराज हैं | चेलाराम को सजा देने का विचार करके सभी भगत साधक ' सदानंद ' द्वारा दी गई सूचनाओं का पालन करते हैं | मठ में ' महाशिवरात्रि ' उत्सव के पश्चात् सदानंद मठाधिपति से बातें करने उनके कक्ष में जाता है | उसी समय अन्य भगत चेलाराम को घसीटकर एक कुटिया में ले जाकर उसे रस्सी से बाँधते हैं | सदानंद नित्यानंद जी के कक्ष को बाहर से ताला लगाकर उनके समाधिस्थ होने की बात सबको बताते हैं | कुछ दिनों बाद नित्यानंद जी की मृत्यु हो जाती है | उनके अंतिम दर्शन के लिए श्रद्धालु मठ में उपस्थित रहते हैं |

चेलाराम का कहीं जाने से पता नहीं चलता | सदानंद जो पाखंड़ी है, परमशिष्य बनकर मठ का कार्यभार स्वयं देखता है | अब मठ में रसोई घर के स्त्रियों की नियुक्ति वासना की परिपूर्ती से की जाती है |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में ' मठों में फैली अनाचार की समस्या ' दिखाई देती है |

5.4.3 **आतंकवाद की समस्या** :-

' आतंक ' का सामान्य अर्थ है, " बहुत ही कठोर व्यवहारों, अत्याचारों, प्रकोपों आदि के कारण लोगों के मन में उत्पन्न होनेवाला भय | "[17] अर्थात् आतंकवाद अपने किसी बड़े उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए आम जनता को अपनी शक्ति से भयभीत करता रहता है | यह आतंकवाद मजहब, सांप्रदायिकता आदि अनेक कारणों से निर्माण किया जाता है | विवेच्य कारणों से निर्माण हुए झगड़ों का परिणाम मासूम लोगों को भुगतना पड़ता है | आतंकवाद के कारण ही मानव ने मानवता को त्याग दिया है | विश्व स्तर की आतंकवाद की समस्या को आज के कहानीकारों ने अपनी कलम का विषय बनाया है |

जनवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' नरेंद्र नागदेव ' द्वारा लिखित ' शिनाख्त ' कहानी में आतंकवाद की समस्या का यथार्थ प्रतिबिंब मिलता है | प्रस्तुत कहानी का नायक दंगे से प्रभावित होकर दंगे के दिन अपने माने हुए अंकल को रस्सी से पीटता है | अपने पिता की उम्र के व्यक्ति पर अन्याय करता है | इस अन्याय का कारण सिर्फ उन दोनों का संप्रदाय अलग - अलग होना है | इस तरह प्रस्तुत कहानी में संप्रदाय के कारण निर्माण हुए दंगे में युवा पीढ़ी अपने ही रिश्तों पर किस तरह प्रहार करती है, इसका मार्मिक वर्णन किया गया है |

आतंक से प्रभावित क्षेत्र पर तैनात पुलिस परिस्थिति पर नियंत्रण लाने की पूरी कोशिशें करती हैं | इसके लिए कभी - कभी उन्हें अपनी जान धोखे में ड़ालनी पड़ती हैं | प्रस्तुत पक्ष का मार्मिक चित्रण मार्च,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' विजय ' द्वारा लिखित ' खैरियत है ' कहानी में किया है | प्रस्तुत कहानी में मजहब के नाम पर हिन्दु - मुसलमानों में दंगा छिड़ जाता है | लोग इतने स्वार्थी बनते हैं कि, अन्य लोगों की मार - काट ड़ालते हैं |अनेक लोगों के मकान जलाये जाते हैं | बहू

- बेटियों पर सरे आम अत्याचार किए जाते हैं | उनकी इज्जत लूटी जाती हैं | यह आतंक शहर में लोगों के मन में खौफ़ निर्माण करता हैं | दंगा ख़त्म होने पर ईमानदार पुलिस ' जावेद ' घर लौट कर चैन से सोना चाहते हैं | लेकिन पिछले दिनों की आतंक क्षेत्र की घटनाएँ उन्हें सपने में भी दिखाई देने लगती हैं | कहानीकार ' विजय ' ने प्रस्तुत पक्ष का चित्रण करते हुए लिखा है, अजीमगंज में आगजनी, तीन हलाक, कई औरतों की सड़क पर आबरू मिट्टी में मिली । छुरी से गुदी चार लाशें झाड़ी में मिली. जाने कितनी बेवा हुई औरतें अनाथ हुए बच्चे।"[18] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में दंगे से प्रभावित वातावरण का चित्रण किया है |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में संप्रदाय, मजहब के कारण आतंक प्रभावित क्षेत्रों में अधिक मात्रा में मानव को ही शारीरिक, मानसिक रूप में क्षति पहुँची हुई दिखाई देती हैं |

5.5 आर्थिक समस्या :-

अर्थ अर्थात् पैसा | जीवन में अनेक वस्तुओं, चीजों आदि के लिए अर्थ की आवश्यकता अनिवार्य है | इसीलिए दुनिया में अर्थ को अनन्य साधारण महत्त्व प्राप्त है | इसी के कारण अमीर - गरीब यह वर्ग निर्माण हुए हैं | अर्थ के ही आधार पर इतराते हुए अमीर, पूँजीपति वर्ग गरीब जनता का शोषण करता है | अर्थ के ही कारण व्यक्ति - व्यक्ति को पहचानने से इन्कार करता है | मानव के नीति-मूल्य ड़गमगाने लगते हैं | वह भ्रष्ट आचरण करने पर विवश होता है | इस प्रकार अर्थ के कारण अनेक समस्याएँ निर्माण होती हैं | ' वर्ष-2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में आर्थिक समस्याएँ परिलक्षित होती हैं |

5.5.1 शोषण की समस्या :-

कहीं उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण तो कहीं भ्रष्ट लोगों द्वारा मासूम जनता का शोषण किया जाता है | कहीं - कहीं घर में भी नारी-नारी का शोषण करती हुई नज़र आती है | इसके कारण भी अनेक हो सकते हैं | इस सन्दर्भ में ' डॉ.रेवा कुलकर्णी ' लिखती है, " नारी की गुलामी का एक मात्र कारण है उसकी आर्थिक परतंत्रता | "[19] इस प्रकार कई कारणों से नारी का भी समाज में शोषण होता है |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

प्रस्तुत समस्या को जुलाई,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' रामेश्वर द्विवेदी ' द्वारा लिखित ' कंठ फटी बासुरी ' कहानी में चित्रित किया है | कान्ह की पत्नी अपने पति पर लगे झूठे इल्जाम के कारण हो रहे अन्याय को बताने हेतु जिला पुलिस अधीक्षक के कार्यालय में जाती है | तब उसी के गाँव के मुखिया ' बिजली दुबे ' के भ्रष्टाचारी पुल्सिवाले कान्ह बहू को ड़रा धमकाकर उसे जिला पुलिस अधीक्षक के कार्यालय के बाहर से ही खदेड़ देते हैं | कान्ह बहू इस बात से ड़रती नहीं इसलिए वे पुलिसवाले उसे बहुत बुरी गालियाँ भी देते हैं | उधर गाँव में भी उसे इन्साफ़ नहीं मिलता क्योंकि ' राजेन्द्र पासवान ' पुलिस भी पुलिस के रूप में गुग्ड़ा और ' बिजली दुबे ' का आदमी है | इस प्रकार भ्रष्ट पुलिस द्वारा आम जनता का किया गया शोषण प्रस्तुत कहानी में दृष्टव्य है |

नवंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' हरिपाल त्यागी ' द्वारा लिखित ' बास्सा कल्लू गिर का चोगा ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में ' कल्लू गिर ' गुसाई है | वह अपना पुश्तैनी व्यवसाय भीख़ङ माँगना छोड़कर अपनी कला गाना गाना, हारमुनियम बजाना, बादशाह का वेश बनाकर लोगों को अपनी कला दिखाना, इसके द्वारा घर चलाता है इससे वह बहुत प्रसन्न है, पर गाँव के ' लंबड़दार ताऊ ' को उसकी यह उन्नति अच्छी नहीं लगती | अतः उन्होंने गाँव में अफवा फैला दी कि, चोगे में काली जादू होने के कारण गाँव की युवा पीढ़ी बिगड़ जाएगी | इस बात से परेशान होकर गाँववाले ' ना रहेगा बांस ना बजेगी बासुरी ' के अनुसार कल्लू के चोगे को जलाते हैं | अतः गृहस्थी चलाने के लिए कल्लू को मन न चाहते हुए पुश्तैनी व्यवसाय करना पड़ता है | इस तरह प्रस्तुत कहानी में उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण दिखाई देता है |

जुलाई,2005 की ' हंस ' ' पत्रिका ' में प्रकाशित ' रत्नेश्वर ' द्वारा लिखित ' लेफ्टिनंट हॉड़सन ' इस ऐतिहासिक कहानी में ' दीया ' के रिसर्च द्वारा अंग्रेजों ने मजदूरों पर किये अत्याचार का, शोषण का चित्रण किया है | अंग्रेज हॉड़सन मजदूरों को भूखा काम करने पर विवश करता, मजदूरों से गलती होने पर बंदूक के कूंदे से उनकी रीढ़ की हड्ड़ी तोड़ी जाती थी | मजदूरों को जलते अलावों पर नंगे पाँव से दौड़ाया जाता था | मजदूर स्त्रियों की कपोलों पर गालियों से युक्त शब्दों को गुदवाया जाता था | इस भूख को मजदूरों के बच्चे बर्दाश्त नहीं कर पाते थे, तो उनकी मृत्यु अटल थी | इस तरह अंग्रेजों के शोषण का भयानक चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है |

शोषण के क्षेत्र में स्त्रियों की स्थिति दयनीय होती है | एक स्त्री ही दूसरी स्त्री का शोषण करती हुई नज़र आती है | प्रस्तुत बात को नवंबर,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' राजेश झरपुरे ' द्वारा लिखित ' लू में खिला फूल ' कहानी में मार्मिकता से दर्शाया है | प्रस्तुत कहानी की ' कुंती ' को उसके पति ' अरविंद ' सास की बातों को सुनकर अपनी पत्नी को मारते - पीटते हैं | कुंती पतिव्रता स्त्री होने के कारण पति एवं सास को कुछ भी नहीं कहती | पति द्वारा मारने, पीटने की बात पीहर में भी किसी को नहीं बताती | इस तरह कुंती शोषण का प्रतिकार नहीं करती |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में शोषण की समस्या स्वार्थांधता, अत्याचार करने की मानसिकता बनना, इन कारणों से निर्माण हुई दिखाई देती है |

5.5.2 <u>नौकरी खरीदने की समस्या</u> :-

समाज में बढ़ते शिक्षितों के साथ नौकरी पाने की होड़ शुरू होती हैं | नौकरी प्राप्त करने के लिए पद रिक्त होने से पहले ही वहाँ ढ़ेरों अर्जों के पर्चे पहुँच जाते हैं | उम्मीदवार शिक्षा स्तर के अनुसार ही नौकरी पाना चाहते हैं | अच्छे साक्षात्कार के बाद उन्हें पता चलता है, रिश्वत देने के कारण किसी और व्यक्ति को ही नौकरी पर नियुक्त किया गया है | इस कारण समाज में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है | पैसों के बल पर नौकरी खरीदी जा सकती है यह विश्वास जो लोग रिश्वत देकर नौकरी पाते हैं उनमें बढ़ रहा है | इस तरह नौकरी खरीदने की समस्या के कारण गरीब नौकरी मिलने की इच्छा रखनेवाले युवा नौकरी न मिलने के कारण उदासीन बनते हैं | यह विकराल समस्या है |

दिसंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' भालचन्द्र जोशी ' द्वारा लिखित ' लौटा तो भय ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में तारा का भाई ' मैं ' मेधावी छात्र है | शिक्षा पूरी होने के उपरांत अच्छे अंकों के प्रमाणपत्र लेकर वह नौकरी ढूँढ़ने लगता है | ' सेवा-आयोग ' में वह नौकरी के लिए अर्जी करता है | उसकी लिखित परीक्षा में वह ' प्रथम श्रेणी ' से उत्तीर्ण भी होता है | साक्षात्कार के बाद उसे पूरा विश्वास होता है नौकरी उसे ही मिलेगी | लेकिन उसे पता चलता है, सेकंड़ ड़िग्री और मामूली सर्टीफिकेट्स पानेवाले उसके मित्र ' कमल ' को सेवा - आयोग में नौकरी मिली है | वह हैरान होता है | कमल उसे बताता है; प्रस्तुत नौकरी उसने सात लाख रूपए की रिश्वत देकर खरीदी है | इस

संदर्भ में कहानीकार ' भालचन्द्र जोशी ' लिखते हैं, " इंटरव्यू में योग्यता देखने नहीं, हैसियत देखने बुलाते हैं | " [20] कुछ भ्रष्ट अधिकारियों के कारण ' मैं ' को एहसास होता हैं कि, पैसों के आगे प्रतिभा का मूल्य कुछ भी नहीं होता |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में नौकरी खरीदने की समस्या के परिणाम का यथार्थ चित्रण किया है |

5.6 **मनोवैज्ञानिक समस्या** :-

' मनोवैज्ञानिक ' का अर्थ है " वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों या मन में उठनेवाले विचारों आदि का विवेचन होता है |" [21] मनोवैज्ञानिक में मानव के मन में निर्माण होनेवाले संघर्षों का विवेचन किया जाता है | कभी - कभी यह संघर्ष एक ही व्यक्ति के मन का द्वंद्व होता है जिसमें व्यक्ति के मन की गुत्थियों को व्यक्त किया जाता है | इन गुत्थियों में मानव मन की कुंठाएँ, दमित वासनाएँ, अतृप्त इच्छाएँ होती है | इस कारण अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याएँ निर्माण होती हैं | ' वर्ष-2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में मनोवैज्ञानिक समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं |

5.6.1 **अंतर्द्वंद्व की समस्या** :-

व्यक्ति के भावनानुसार कोई आचरण या व्यवहार नहीं हुआ तो उसके मन में संघर्ष निर्माण होता है | यह आचरण अगर सामाजिक नीति - नियमों के विरूद्ध हो तो यह मानसिक अंतर्द्वंद्व की समस्या उस व्यक्ति के मन को बहुत तकलीफ पहुँचाती है | इस सन्दर्भ में ' मोटूरि सत्यनारायण ' ने लिखा है, " अंतर्द्वंद्व व्यवहार के प्रेरकों की पारस्पारिक स्पर्धा के कारण होता है | जब प्रतिद्वंद्वी प्रेरक एक ही साथ सक्रिय हो जाते हैं जिससे अंतर्द्वंद्व निर्माण हो जाता है | " [22] अर्थात् अंतर्द्वंद्व की मानसिक समस्या दो परस्पर विरोधी घटनाओं की समान आवश्यकता निर्माण होने पर तैयार होती है |

जनवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' मनीषा कुलश्रेष्ठ ' द्वारा लिखित ' प्रेतकामना ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी के ' डॉ. महेश्वरपंत ' वृद्धावस्था में बच्चों का गृहस्थी के चक्कर में फँसना, पत्नी की मृत्यु होना इन कारणों से अकेले जीवन व्यतीत करते हैं | वे इसलिए

जीवन से विमुख भी हो गए हैं | अचानक एक दिन उनकी मुलाकात ' अणिमा ' से होती है | अणिमा उनकी पूर्व शोध-छात्रा है और उनसे एकतर्फा प्रेम करने से अविवाहित है | अणिमा और डॉ. महेश्वरपंत की जब मुलाकात होती है तो दोनों पुरानी यादों और अकेलेपन के कारण शरीर-संबंध रखते हैं | दोनों के शरीर - संबंध ' सलील ' देखता है, यह बात उसे अच्छी नहीं लगती | वह क्रोधित होकर अपने घर चला जाता है | इस बात से डॉ. महेश्वरपंत के सामने अंतद्‌र्वंद्‌व निर्माण होता है कि,पहले तो उनके बच्चों के सामने उनका जो आदर्श था, वह ढ़ह गया, दूसरी वृद्‌धावस्था में अकेलेपन के कारण उन्हें एक साथी की जरुरत हैं | अंत में अणिमा का साथ और उसके साथ हुए आत्मविश्वासपूर्ण वार्तालाप से वे इस समस्या का समाधान करने में सफल होते हैं |

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में ' अतंद्‌र्वंद्‌व की समस्या ' दर्शायी है |

5.5.2 **अचेतनग्रस्त नारी की समस्या** :-

' अचेतन ' का अर्थ बताते हुए ' डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय ' ने लिखा है, " मानसिक जीवन के दो छोरों तंत्रिका तंत्र और चेतना के मध्य जो मानसिक प्रक्रिया होती है, असे ' अचेतन 'कहते है |" [23] स्वप्न का संबंध इसीसे हाता है | मन की अधुरी इच्छाओं को व्यक्ति स्वप्न के माध्यम से देखकर उनकी तृप्ति का आनंद लेते हैं | इस सन्दर्भ में ' डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय ' ने लिखा है, " समाज के प्रतिबंध कामेच्छाओं का सर्वाधिक दमन होता है, अतः वे ही अचेतन के अंग बन जाते हैं और स्वप्न में चित्रदृश्यों के रुप में दिखते हैं |" [24] अपनी इच्छाओं को सपनों के द्‌वारा फलित होते हुए देखना मानसिक विकृति है | प्रस्तुत समस्या को ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में दर्शाया है |

फरवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' लवलीन ' द्‌वारा लिखित ' एक लड़की की मौत ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी की नायिका को सपनों द्‌वारा अपनी दमित इच्छाओं को फलित होते हुए देखने की आदत है | वह दिवास्वप्न भी देखती है | इस मानसिक विकृति का उसके घरवाले विरोध करते हैं तो वह एकांत स्थल देखकर दिन में भी सपने देखती हैं | उसका पाठशाला की पढ़ाई में, घर के कामों में ध्यान नहीं हैं | सपने देखने की आदत से उसमें चिड़चिड़ापन करना, अकेले रहना यह

दोष निर्माण हुए हैं | एक दिन इन सपनों में वह इतनी मश्गूल होती है कि, स्वयं की मृत्यु को ही सपने में देखती है | पहली बार वह इस सपने से ड़रती है और जिंदा होने के लिए छटपटाती है | आखिर जीवन के महत्त्व को समझकर वह अचेतना से चेतना में लौट आती है |

हमेशा सपनों के द्वारा जीवन व्यतीत करना बुरी आदत है | इस सन्दर्भ में आंतरिक इच्छाओं का प्रकटन किस तरह होता है, यह बताते हुए ' डॉ एम्. वेंकटेश्वर ' लिखते हैं, " स्वप्न की कार्य पद्धतियों का मुख्य काम आभ्यांतरिक इच्छाओं का स्वप्नों में रुप बदल देना | यह कार्य तीन प्रकार से होता है; एक है विस्थापना, दूसरा है परीक्षण और तीसरा है प्रतीकीकरण |" [25] इस प्रकार प्रतीकों के द्वारा भी अदृश्य बातों की सपने में कल्पना की जाती है |

जुलाई, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' मुशर्रफ आलम जौकी ' द्वारा लिखित ' ड्रैकुला ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी की नायिका सोफिया के अभिभावकों की मृत्यु वह उम्र से छोटी थी तब हुई थी |अतः उसकी जिम्मेदारी उसकी जीजी और जीजा ने ली | सोफिया अंतर्मुखी बनने के कारण अकेली अपने कमरे में बैठकर स्वयं से ही बातें करती रहती | अकेली कमरें में ही अपने आप तक सीमित रहने के कारण उसे अपने भय का प्रतीक ' ड्रैकुला ' अपने कमरे में दिखाई देता | जो आसेबी दास्तानों का प्रसिद्ध पात्र है | ड्रैकुला सोफिया को ड़राता, धमकाता, नोचता रहता | वास्तव में यह उसका भ्रम है | उसे बढ़ती उम्र के कारण कहीं भी विवाह तय नहीं हो पा रहा है, इस बात से ड़र लगता है | यह जीवन की मामूली बात उसके लिए कड़वी सच्चाई बन गई है | एक दिन वह आत्मविश्वास के साथ विवाह तय न हो पाने का ड़र मन से निकाल देती है | तब यही ' ड्रैकुला ' उसे अपने कैफिन में लेटने जा रहा है, ऐसा एहसास होता है |

विवेच्य कहानियों में स्वप्नों के माध्यम से अपनी दमित इच्छाओं को पूरा करनेवाली नारियाँ अचेतनग्रस्त मनोव्यथा का शिकार किस तरह होती है, यह मार्मिकता से दर्शाया है |

5.5.3 <u>अकेलेपन की समस्या</u> :-

व्यक्ति को समाज में रहते हुए जीवन यापन करना अच्छा लगता है | क्योंकि व्यक्ति समाजप्रिय प्राणी है | व्यक्ति अपने परिवार में खुशी से रहता है | आधुनिक युग में यांत्रिकीकरण,

बदलते मूल्य, विभक्त कुटूंबपद्धति, वृद्धावस्था में जीवनसाथी की हुई मृत्यु के कारण अकेलेपन की समस्या उभरती है |

जनवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' मनीषा कुलश्रेष्ठ ' द्वारा लिखित ' प्रेतकामना ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी के नायक ' डॉ. महेश्वरपंत ' नौकरी से सेवानिवृत्त होते हैं | बेटी का विवाह होकर वह ससुराल चली जाती है | बेटे का विवाह होने के उपरांत नये जमाने की बहू विवाह के थोड़े ही दिनों बाद पति के साथ अलग दूर रहने चली जाती है | महेश्वरपंत अब पत्नी के साथ रहने लगते हैं लेकिन वह भी बेटे का अलग रहना पसंद नहीं कर पाती | इस बात को वह गंभीरता के साथ लेने के कारण ही उनकी मृत्यु होती है |अब ' महेश्वरपंत ' के सामने अकेलेपन की समस्या निर्माण होती है | जिन्हें कॉलेज में नौकरी के दरमियां हमेशा छात्र घेरा करते थे, वे अपने विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं, शोध-छात्रों का मार्गदर्शन कर चुके हैं, जीवन में अपने परिवार से खुश थे | अब वृद्धावस्था के इस दौर में उन्हें परिवार के साथ जीवनसाथी की जरुरत थीं , तो उनका परिवार बिखर गया | अतः वे अंतर्मुखी और निराश बन गए |

जून, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' मुकेश वर्मा ' द्वारा लिखित ' तीसरी सुरंग ' कहानी प्रकाशित है | विवाह के बाद प्रस्तुत कहानी के नायक ' मैं ' का जीवन खुशी से बीत रहा है | उनका बेटा छः साल का होने के पश्चात् अचानक नायक के पत्नी की मृत्यु होती है | अतः नायक के सामने बेटे की जिम्मेदारी के साथ अकेलेपन की समस्या निर्माण होती है |

अक्तूबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' कृष्ण बिहारी ' द्वारा लिखित ' इंतजार ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी की नायिका ' चाची ' है | उनके पति एक दिन अचानक नौकरी का त्याग करके घर - परिवार और पत्नी का खयाल किए बिना जिंदगी से ऊबकर कहीं चले जाते हैं | इससे ' चाची ' अकेली होती है | वह स्वाभिमान के साथ अपने तीनों बच्चों को बड़ा करके उनकी गृहस्थी बसाती हैं | बहुएँ अलग रहने लगती हैं | सब बच्चे अपनी गृहस्थी मे खो जाते हैं | इस तरह चाची के सामने फिर से अकेलेपन की समस्या निर्माण होती हैं |

दिसंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में ' कविता ' द्वारा लिखित ' उलटबांसी ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी में अपूर्वा की माँ अपने पति की मृत्यु के उपरांत बिल्कुल अकेली हो जाती है | उसके बेटे शहर में रहते हैं | वे माँ का खयाल भी नहीं रखते | वृद्धावस्था में माँ को मोतियाबिंद होता है, वह स्वयं खाना पकाती है, फिर भी उसके बेटे इस बात की ओर ध्यान नहीं देते | इसलिए उनकी माँ बेटों के दुर्व्यवहार और अकेलेपन से त्रस्त होती है | वृद्धावस्था के इस दौर में उसे एक जीवनसाथी मिलता है | अकेलेपन से पीड़ित होकर अपने विवाह का निर्णय वह बेटों को सुनाती है | बेटों के लाख अनुनय करने पर भी वह विवाह करके अकेलेपन से मुक्त होती हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में अधिकतर जीवनसाथी की मृत्यु के कारण आये हुए अकेलेपन की समस्या को दर्शाया है |

5.7 <u>प्रशासनिक समस्या</u> :-

' प्रशासन ' का अर्थ है, " किसी राज्य के परिचालन का प्रबन्ध या व्यवस्था विषयक कार्य करने की शक्ति या सामर्थ्य | " [26] अर्थात् राज्य को परिचालित करने के लिए रचना बनाई जाती है; जिसके द्वारा शासन संबंधित सभी कामों का व्यवस्थापन किया जाता है | शासन के नियमों में स्थैर्य नहीं होता; परिस्थिति, पक्ष, राजनीति आदि कारणों से इसमें बदलाव भी आते रहते हैं | सरकार स्वयं को मुनाफा हो ऐसी नीतियों का अवलंब राज्य परिचालित करते समय करती हैं | नौकरी के बढ़ते अवसरों को देखकर अधिक - से - अधिक लोगों को काम या नौकरी मिले और सरकार की तिजोरी में से राजस्व का व्यय अधिक न हो | इन बातों पर विचार करते हुए प्रशासन द्वारा नौकरी की सेवा देते समय ' कॉन्ट्रेक्ट ' पद्धति का अवलंब किया है | इससे नौकरी पानेवाले अधिक कार्यक्षमता से अच्छा काम करते हैं, साथ ही अधिक से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं | तो युवाओं में नौकरी की समस्या निर्माण होती हैं | जैसे -

5.7.1 <u>नौकरी के नवीनीकरण की समस्या</u> :-

शिक्षा के बढ़ते अवसरों के कारण हर क्षेत्र में छात्रों की संख्या में भी वृद्धि हो रही हैं | इन शिक्षाप्रद छात्रों के लिए अधुनातन तंत्रज्ञान के कारण नौकरियों की संख्या में भी वृद्धि हुई हैं | लेकिन

इन नौकरियों में अब ' कॉन्ट्रेक्ट पद्धति ' अर्थात् ' नौकरी के नवीनीकरण ' की समस्या निर्माण हुई है | कॉन्ट्रेक्ट के तौर पर नौकरी दी जाने के कारण युवाओं के सामने कभी - भी बेरोजगारी निर्माण हो सकती है | जिससे वे जीवन के प्रति विमुख हो सकते हैं | इस सन्दर्भ में " पद्मा चामले " जी की बात विचारणीय है- " बेरोजगारी से केवल व्यक्ति ही प्रभावित नहीं होता, बल्कि परिवार, समाज तथा देश की सुरक्षा के लिए भी धोखा उत्पन्न होता है |" [27] इस तरह ' नौकरी के नवीनीकरण ' के कारण निर्माण हुई बेरोजगारी से युवाओं की मानसिकता बिगड़ती है, जो आगे चलकर समाज के लिए ख़तरा निर्माण कर सकते हैं |

' अप्रैल ', वर्ष-2005 ' हंस ' पत्रिका में ' कुणाल सिंह ' द्वारा लिखित ' शोकगीत ' कहानी प्रकाशित है | प्रस्तुत कहानी के मुख्य पात्र ' कुणाल ' और ' मेहंदीरत्ता ' इन दोनों मित्रों के सामने ' नौकरी के नवीनीकरण ' की समस्या अचानक उन्हें संकट के कगार पर खड़ा करती है | ये दोनों एक ही कंपनी में नौकरी करते थे | उनका जीवन नौकरी के उपरांत खुशी से बीत रहा था | तभी अचानक कंपनीवालों ने बिना कुछ ठोस कारण बताए; एक साथ तीन महीने का वेतन देकर दोनों को नौकरी से निकाल दिया | वे दोनों बेकार बन गये | नौकरी द्वारा निकाले जाने की बात वे घर में बता नहीं सके, अतः नौकरी के समय वे घर से तैय्यार होकर निकलते हैं | दूसरी नौकरी की तलाश कर रहे हैं पर ग्यारह दिन होने के बावजूद वे इसमें असफल ही बने रहे | अचानक तीन महीने का वेतन हाथ में आने से बिना कुछ सोच - विचार किये उन्होंने शराब पीने में वे पैसे खर्च किये | अतः ऐय्याशी में पैसे खर्च करने के कारण अब उन्हें पैसों की कमी टीस पहुँचा रही हैं | बेरोजगारी के कारण वे दुर्गति की ओर बढ़ते हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में ' नौकरी के नवीनीकरण ' की आधुनिक प्रशासनिक समस्या का यथार्थ चित्रण किया गया है |

निष्कर्ष :

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में विभिन्न समस्याएँ चित्रित की गई हैं | विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ विचार के साथ अनुभूति का अंग बनकर आई हैं | विवेच्य

कहानियों में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, प्रशासनिक समस्याएँ परिलक्षित होती हैं |

राजनीतिक समस्या के अंतर्गत चित्रित ' मुखौटेबाज राजनेता की समस्या ' में राजनीतिक दाँव - पेचों के कारण सामाजिक वातावरण तंग और हिंसा का बनता है, इसका विवेचन किया है |

विवेच्य कहानियों में प्रमुखतः से सामाजिक समस्याएँ अधिक मात्रा में दृष्टव्य हैं | अंतर्जातीय विवाह को समाज स्वीकृत नहीं करता फिर भी अंतर्जातीय विवाह करने के लिए युवा घर से भाग जाने के लिए विवश होते है | नक्सलवादियों की समस्या के अंतर्गत आम जनता उनकी भूमिका को समझ ाती नहीं, यही इनकी समस्या है | अकेलापन, जीवनसाथी का रूखापन, पति द्वारा यौन संबंध की तृप्ति न होना इन कारणों से अवैध यौन समस्या निर्माण हुई है | आज प्रस्तुत समस्या आधुनिक फैशनपरस्त समाज में तेजी से बढ़ती हुई दिखाई देती है | लिंगभेद की, अकेलेपन की, अनमेल विवाह, परित्यक्ता नारी की, प्रेम में असफल होनेवाले युवाओं की, दृष्टिहीन लोगों की, मानवता को तिलांजलि देनेवाली समस्या इन सामाजिक समस्याओं का ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में सजीवता, मार्मिकता के साथ चित्रण किया है |

' धार्मिक समस्या ' के अंतर्गत ' अंधविश्वास ' की समस्या का यथार्थ चित्रण विवेच्य कहानियों में किया गया है | मठों में अनाचार फैलने की समस्या द्वारा ढ़ोंगी साधुओं की गुनहगारी प्रवृत्ति का भंड़ाफोड़ किया है |

आर्थिक समस्या के अंतर्गत उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण, भ्रष्ट पुलिस द्वारा आम जनता का शोषण विवेच्य कहानियों में दर्शाया है | नौकरी पाने की होड़ में रिश्वत देने से नौकरी खरीदने की समस्या निर्माण हुई है, इस पक्ष को विवेच्य कहानियों द्वारा दर्शाया है |

मनोवैज्ञानिक समस्या के अंतर्गत अचेतनग्रस्त नारी समस्याओं का जिक्र बहुत खुबसूरती के साथ किया है | अचेतनग्रस्त मनोव्यथा का शिकार बनी नारियाँ सपने देखना, अपनी दमित इच्छाओं को प्रतीक रूप में ' ड्रैकुला ' द्वारा पूरा करना, ये उनकी आदतें हैं, अंततः वह सपनों की दुनिया

छोड़कर चेतन अवस्था को प्राप्त करती हैं | मानसिक विकृति से छूटकारा पाती हैं | विवेच्य कहानियों में अंतद्‌र्वंद्‌व की समस्या, अकेलेपन की समस्या का चित्रण मार्मिकता से किया है |

प्रशासनिक समस्या के अंतर्गत शासन पक्ष से संबंधित ' नौकरी के नवीनीकरण ' की समस्या से युवा वर्ग परेशान हैं | वह अपनी नौकरी के प्रति आश्वस्त नहीं | इस समस्या का विवेच्य कहानी में यथार्थ चित्रण किया है |

विवेच्य कहानियाँ जिनमें समस्याएँ चित्रित की गई हैं, वे आज के समाज से प्रासंगिकता रखती हैं | प्रस्तुत समस्याएँ परिणाम के बारे में सोचकर चिंतन के लिए प्रवृत्त करती हुई नज़र आती हैं |

इस प्रकार ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में चित्रित समस्याएँ स्पष्ट होती हैं |

संदर्भ :-

1. हिंदी में समस्या साहित्य - डॉ.विमल भास्कर - पृ.19
2. हिंदी शब्दसागर (दसवाँ भाग) - संपादक श्यामसुंदर दास - पृ.4967
3. भाषा शब्द कोश - संपादक रामशंकर शुक्ल रसाल - पृ.1521
4. प्रामाणिक हिंदी कोश - संपादक रामचंद्र वर्मा - पृ.1097
5. नालंदा विशाल शब्दसागर - संपादक श्री नवल जी - पृ.1407
6. सामाजिक समस्या - राम आहुजा - पृ.1
7. साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक तुलनात्मक अध्ययन - डॉ.वाय.बी.धुमाळ - पृ.96
8. यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ - डॉ.योगेश सूरी - पृ.151
9. नारी साहित्य : विविध संदर्भ - डॉ.रामेश्वर नारायण - पृ.15
10. हंस, अप्रैल,2005 : तैंतीस परसेंट - नीलिमा सिन्हा - पृ.16
11. अशोक मानक हिंदी शब्द - कोश - डॉ.शिवप्रसाद शास्त्री - पृ.520
12. हंस, जून,2005 - समरवंशी - सोहन शर्मा - पृ.23
13. हंस, फरवरी,2005 - अंधेरे में आकार लेता नाटक - दूर्वा सहाय - पृ.42
14 हिंदी उपन्यासों के असामान्य चरित्र - . डॉ.सुजाता - पृ.150
15. महिला उपन्यासकारों की रचनाओं मे बदलते सामाजिक संदर्भ - शीलप्रभा वर्मा - पृ.66
16. नालंदा विशाल शब्दसागर - संपादक श्री नवल जी - पृ.10
17. अशोक मानक हिंदी शब्द कोश - संपादक शिवप्रसाद शास्त्री - पृ.98
18. हंस, मार्च, 2005 - खैरियत है - विजय - पृ.56
19. हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी - डॉ.रेवा कुलकर्णी - पृ.96
20. हंस, दिसंबर, 2005 - लौटा तो भय - भालचन्द्र जोशी - पृ.18
21. प्रामाणिक हिंदी कोश - संपादक रामचंद्र वर्मा - पृ.882
22. विश्व ज्ञान संहिता - १ - संपादक मोटूरि नारायण - पृ.105

23. हिंदी कहानी : बदलते प्रतिमान - डॉ.रघुवरदयाल वार्ष्णेय - पृ.73

24. 'वही ' - 'वही ' - पृ.74

25. हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार - डॉ.एम्.वेंकटेश्वर - पृ.283

26. नालंदा विशाल शब्दसागर - संपादक श्री नवल जी - पृ.908

27. हिंदी कहानियों में युवा मानसिकता - पद्मा चामले - पृ.132

****